आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 01-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को अविनाशी रुहानी ईश्वरीय पालना देकर, पुराने लौकिक सम्बन्धों से वैराग्य दिलाने वाले, बेहद के टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - चुस्त स्टूडेन्ट बन अच्छे मार्क्स से पास होने का पुरुषार्थ करो, सुस्त स्टूडेन्ट नहीं बनना, सुस्त वह जिन्हें सारा दिन लौकिक मित्र-सम्बन्धी याद आते हैं.

हम आत्मा ये जब भक्ति-मार्ग में थी तो भगवान से कहती थी, हे प्रभु - आप आयेंगे तो हम आप पर वारी जायेंगे. बाबा कहते है मैं अभी सनमुख आया हूँ और में ने ही यह ज्ञान-रुद्र यज्ञ की स्थापना की है जिसमें यह पुरानी दुनिया की सारी सामग्री स्वाहा होनी ही है. यही संगम का समय है जब की सारे कल्प की सबसे श्रेष्ठ तकदीरवान आत्मा ये अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प-श्वास को बाबा के यज्ञ में स्वाहा कर सफल करती है. हिम्मत रख अपना और अनेकों का भाग्य बनाने के निमित बनती है. लेकिन यह सब बातें भी वही समझेंगे, जो कल्प पहले मनुष्य से देवता बने थे और स्वर्ग में ऊंच पद प्राप्त किया था.

हमारे ब्राह्मण जीवन की तीन मुख्य धारणायें है - त्याग, तपस्या और वैराग्यता.

- क्या त्याग करते है? पुरानी आसुरी आदतों और पुराने आसुरी संस्कारों का त्याग.
- क्या तपस्या करते है? भयंकर कलयुगी आसुरी संसार में रहकर सम्पूर्ण पवित्र वृति वाला तपस्वी जीवन जीने की तपस्या.
- क्या वैराग्यता धारण करते है? पुरानी दुनिया के साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर से सम्पूर्ण वैराग्यता. लेकिन मनुष्य आत्मा ये पुरानी दुनिया से वैराग्य भी तब करती है जब उसे नयी सतयुगी दुनिया में ऊंच दैवी-देवता बनने का नशा चड़े.

बाबा ने आज मुरली में हम सब बच्चों को पुरानी दुनिया से वैराग्यता का पाठ पक्का कराने के लिए कहे गये महा-वाक्यों को फिर से बाप की याद में पढ़ेंगे.

- बाबा ने कहा, यह पाठशाला है, यहाँ तुम बच्चों की एम ऑब्जेक्ट ही है श्रीकृष्ण जैसा प्रिन्स बनने की. फिर शिव भगवानुवाच है कि मैं तुमको यह राजयोग सिखलाकर तुम्हें राजाओं का राजा बनाता हूँ. यहाँ तुम्हें स्वयं भगवान पढ़ाते हैं, तुम सब प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हो.

- बाबा कहते हैं तुम्हारे बहुत जन्मो के अन्त के भी अन्त में मैं तुमको यह ज्ञान सुनाता हूँ तुमको फिर से श्रीकृष्ण जैसा प्रिन्स बनाने के लिए. यह ईश्वरीय पाठशाला का टीचर ही शिवबाबा है. शिवबाबा ही आकर दैवी धर्म की स्थापना करते हैं. तुम्हारी आत्मा जानती है कि हम परमपिता परमात्मा से अब तकदीर बनाने आये हैं. यह राजयोग सीखकर ही तुम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने की अपनी तकदीर बनाते हो.

- बाबा ने कहा, गीता के ज्ञान से ही तुम्हारी तकदीर बनती है. कल्प पहले भी तुम्हारी तकदीर जगी थी. फिर बहुत जन्मो के अन्त में तुम एकदम तमोप्रधान बेगर बन गये हो. अब फिर से तुम्हें प्रिन्स बनना है. जैसे यह राधे-कृष्ण बनते है वैसे तुम भी प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हो.

- बाबा कहते हैं तुम बच्चे जानते हो यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक थे. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही उन्होंने पुरुषार्थ कर ऐसा ऊंच पद प्राप्त किया है. बाप आते ही है एक आदि सनातन दैवी-देवता धर्म की स्थापना करने तो बाकी सब पुराने धर्म विनाश हो जाते है. स्वर्ग में एक ही धर्म चलता है. जैसे लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक बनते है वैसे तुम भी अब पुरुषार्थ कर अपना ऊंच पद प्राप्त करते हो.

- बाबा कहते हैं सतयुग में तुम अपने गॉल्डन महल आदि बनायेंगे. सतयुग को ही गॉल्डन एज कहा जाता है और सतयुग को ही राम-राज्य भी कहा जाता हैं. अभी तुम बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी रहती है क्योंकि तुम ही सच्चे स्वर्गवासी बनते हो. तुम ही मनुष्य से दैवी-देवता बनते हो.

- बाबा कहते है कि यह भी तुम गिने-चुने ब्राह्मण आत्मा ये ही जानते हो कि अब स्वयं परमात्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना हो रही हैं. यह सदैव तुम्हें याद रहना चाहिए की तुम ही वह तकदीरवान आत्मा ये हो जिसको स्वयं भगवान स्वर्ग का मालिक बनाने पुरुषार्थ करवा रहे है.

- बाबा कहते है तुम्हारा ममत्व अब पुरानी दुनिया और पुराने सम्बन्धों से निकल जाना चाहिए. जानते हो यह सब नर्कवासी, कब्रस्तानी है. यह सब खत्म हो जाते है. अब तुम सबको मेरे साथ घर जाना ही है इसलिए सुखधाम-शांतिधाम को ही याद करते रहो. ॐ शांति.